**शांति सद्गुण**

भगवद गीता, १६ अध्याय (श्लोक २) में **शांति** को दैवी गुण बताया गया है | २६ सदगुणों में केवल एक ही दैवी गुण है जो हमारी नित्य प्रार्थना का एक अभिन्न अंग है - शांति (ॐ शांति: शांति: शांति:) |

**शांति** को अलग अलग दृष्टिकोण से भिन्न भिन्न समझा जाता है - जैसे मन की चंचलता का अभाव, वाणी का मौन होना, शरीर का स्थिर अवस्था में होना इत्यादि | हम सब को शांति की इच्छा है - घर में शांति, कार्यशाला में शान्ति, भ्रमण करते हुए शांति किन्तु शांति वास्तु, व्यक्ति, घटना, परिस्थिति से परे है क्योंकि यह एक दैवी गुण है |

**शान्ति का एक उदहारण है** - एक दीपक जो एक ऐसी जगह पर रखा हो जहाँ कुछ भी वायु की गति न हो, तो उस दीपक का प्रकाश और उष्णता बिना किसी परिवर्तन के रहते हैं | ठीक इसी प्रकार जब किसी भी परिस्थिति में, किसी भी व्यक्ति से, किसी भी घटना में और किसी भी वस्तु के प्राप्त/अप्राप्त होने पर यदि हम उस दीपक की तरह रहे, यह तभी संभव है जब हमने शान्ति सद्गुण को अपना लिया हो |

हर साधक का लक्ष्य होता है **समभाव** क्योंकि वह उसे गुणातीत अवस्था का अनुभव देता है, समभाव होने के लिए **शान्ति** धारण करना आवश्यक है और शान्ति धारण करने के लिए, तीन सिद्धांतों का मन में दृढ़ होना आवश्यक है –

* **अहिंसा** - मन, वाणी और शरीर से किसी के लिए (इस में हम खुद भी शामिल हैं) अहित या बुरा न करना और किसी की प्रतिकूल अवस्था में प्रसन्न न होना
* **वैराग्य** - स्थूल संसार से कुछ अपेक्षा न रखना, केवल अपने कर्त्तव्य का पालन करना बिना किसी इच्छा के
* **दोषदृष्टि न होना** - ईश्वर के रचे संसार में दोष न देखना वरन उसे जैसा है, वैसा मानना

**शान्ति मन का भाव है**, क्योंकि जब मन शांत होता है, तो हम हर परिस्थिति में अपने आप को संभालकर (अपनी क्षमता को लगा कर और ईश्वर का सहारा लेकर) आगे बढ़ते रहते हैं | **शान्ति का सबसे बड़ा शत्रु है कामना** | उदाहरण लें - हमने सोचा की हम तीर्थ पर जाएंगे और सब मंगलमय होगा किन्तु मार्ग में ही हमारा वाहन खराब हो जाता है और उसे ठीक कराने के लिए एक घंटा समय लग जाता है - एक शांत साधक इस परिस्थिति को ईश्वर का विधान मान कर आगे बढ़ सकता है या फिर दुखी या क्रोधित हो सकता है की मेरे साथ ऐसा क्यों हुआ |

**शांति को दृढ़ करने के लिए सबसे बड़ा सहायक है** हमारी अपने लक्ष्य (भगवद प्राप्ति) में दृढ़ता और सच्चाई | यदि लक्ष्य दृढ़ है, तो हम हर कार्य को शान्ति से सोच कर, सामर्थ्य को ध्यान कर और लोक संग्रह की भावना से कर सकेंगे | **शान्ति एक सच्चे कर्मयोगी का लक्षण है** ठीक उसी प्रकार जैसे सूर्य शान्ति और दृढ़ता से अपना कर्त्तव्य रोज़ पूरा करता है बिना किसी इच्छा के |

यहां पर यह समझना आवश्यक है की **शान्ति का अर्थ अप्रगति नहीं है** - परिवर्तन श्रिष्टि का नियम है किन्तु परिवर्तन हो तो हमारे शांत स्वभाव में हो - वह और दृढ़ हो जाए; साथ ही, शांति का अर्थ अपनी क्षमता को एक जगह समेट के रखना नहीं किन्तु जीवन में आगे बढ़ना, इश्वर का धन्यवाद करते रहना और मन में अभिमान न होना है |